आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वत:
जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से सम्बन्धित मासिक पत्रिका।

ाटक - प्रकाश

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

01 अप्रैल 2013 विक्रम संवत् 2070

सम्पादक की कलम से ....

अपनो से अपनी बात

ात्मन,

शुभाशीर्वाद !

श्वास करना मनुष्य की प्रवृति हैं संसार के
कार्यो को पूरा करने के लिए विश्वास ही माध्यम है मनुष्य जानता हैं कि
न यात्रा में अकेले सारे कार्य वह नहीं कर सकता और नहीं विश्वास के
सार में चल सकता है। विश्वास के फलस्वरूप ही श्रद्धा उत्पन्न होती है
हाँ ये दोनों ही प्रकाश और पूर्णिमा रूपी चन्द्रमा की शीतलता के रूप में
थ चलती है वहीं जीवन में निरन्तर वृद्धि होती है। इनमें से किसी एक
न्यूनता होने पर जीवन ऊबड़-खाबड़ कंटीला असन्तुलित सा हो जाता है
से जीवन में अनेक-अनेक विषमताये उत्पन्न होती है और इन्हीं स्थितियों
स्वरूप जीवन दु:ख-विषाद और बाधाओं से घिरने लग जाता है और
प्रकाश के स्थान पर अंधकार रूपी अन्तहीन बाधाये बनी रहती है और
की शीतलता के स्थान अमावस्या की कालिमा आ जाती है प्रमुख रूप से
तियों का निर्माण कर्त्ता व्यक्ति स्वयं होता है।

सांसारिक व्यक्ति का झुकाव ईश्वर और गुरु के प्रति रहता है क्योंकि वह
त-शान्ति प्रदाता है, सद्गुरु शाश्वत रूप से इन प्रज्ञाओं को जगाने वाला
रूप होता है। गुरु ही अपने शिष्य को अहम् ब्रह्मास्मी का ज्ञान कराता है
अकेला ही पूरी सृष्टि में ब्रह्म स्वरूप में है अर्थात् हर व्यक्ति निर्माण
लन कर्ता और पूर्णता कर्त्ता है। जीवन की तीनों ही क्रियाओं में निरन्तरता
बना रहे और इस प्रवाह में किस तरह अविरलता बनी रहे यही चेतना

प्राप्त करने के लिए शिष्य को गुरु धारण करना पड़ता है तथा उस
जिससे की जीवन में गतिशीलता बनी रहे।

व्यक्ति स्वयं जानता है यदि जीवन में गति नहीं है
बनी रहती है तो वहाँ पर जिस तरह से जमीन पर छोटे-छोटे गड्ढो
और उस सड़ान्ध से बीमारी के रूप में अनेक तरह के कीड़े और जीव
का जीवन बदबू और सड़ान्ध युक्त बन जाता है इसके साथ अनेक-
मय स्थितियाँ जीवन में स्थायी रूप से आ जाती है शिष्य को इस तर
समाप्त करने का भाव चिंतन और चेतना गुरु प्रदान करता है। इसीलि
विश्वास की निरन्तरता का भाव बना रहना आवश्यक है।

सद्गुरुदेव डॉ नारायण दत्त जी श्रीमाली जी के अवत
में मनाने के पीछे साधक का स्वयं का आत्मीय रूप में स्वार्थ भाव
उसका हित चिंतन होता है कि वह भी गुरु के समरूप अपने आपको
रूपेण पशुवत जीवन से निवृति प्राप्ति हेतु, साथ ही मानसरोवर रूप
करने के लिए और जीवन की श्रेष्ठ कामनाओं की पूर्ति के लिए काम
की तपो भूमि पाशुपतये ज्योंर्तिलिंग व हिमालय की कन्दराओं में अ
2013 को राम जानकी मंदिर प्रांगण, राजा भर्तृहरि की तपोभूमि
सद्गुरु चैतन्य अमृत महोत्सव के रूप में सम्पन्न होगा।

सद्गुरुदेव की आज्ञा अनुसार धार्मिक स्थलो पर साधनात्मक शि
पीछे उनका मन्तव्य दिव्य तेजमय तपोभूमि पर साधनाएँ करने से स
आर्शीवाद साधक को प्राप्त होता है। जिससे की साधक संसार में ज्ञा
सके और साथ ही शारीरिक और आत्मिक शक्ति से बलशाली बन स
अपने जीवन को सरोबार कर सके। इसीलिए महा सरस्वती, महाक
स्वरूप में पूर्णरूपेण वैष्णो देवी को आत्मसात कर सके इसी हेतु स
पहाड़ी पर अवस्थित **माता वैष्णो देवी के तेजमय मंदिर प्रांगण में**
में सम्पन्न होगा। सद्गुरुदेव के गृहस्थ जीवन में पदार्पण के शुभ मंजुल
ले जिनमें सही अर्थो में गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा हो और वे त्रिगुणात्मक
चाहते है। इसीलिए **पंजीकरण (Registration)** अनिवार्य है जिससे
सकें।